



## ‘पत्र’ संपादक के नाम

‘ज्ञानामृत’ पढ़ने से डिप्रेशन से उबरने में बहुत मदद मिलती है, मन को ताज़गी का अहसास होता है, आत्मा की सुषुप्त शक्तियाँ जागृत हो जाती हैं, मन मजबूत हो जाता है जिससे संसार की किसी भी परिस्थिति का सहज सामना करने में सफल होते हैं।

— ब्रह्माकुमार अनिल,  
श्रीरामपुर रोड, शाहगंज

‘ज्ञानामृत’ की नियमित पढ़ाई से स्कूल में भाषण करने में मदद मिलती है और कई प्रश्नों के उत्तर कई अंकों से मिलते हैं। कोई आत्मा टेन्शन में दिखती है तो उसे ज्ञानामृत देकर खुशी की लहर में लाता हूँ।

— कल्याणकर मल्हारी बापू,  
प्रधानाचार्य, बनपुरी, सांगली

मई अंक का पहला ही लेख संजय की कलम से ‘मधुर बनो’ मन को छू गया। मधुर बनने की श्रीमत सभी आत्माओं के परमपिता परमात्मा दे रहे हैं। यह न जानने के कारण आज एक-दूसरे से नफरत है। आदरणीया दादी जानकी जी ने कहा, सदा एवररेडी रहने और ‘हाँ जी’ के पार्ट के लिए सेकेण्ड में साइलेन्स में जाओ, न बीती बात, न आने वाली बात, कोई चिन्तन नहीं, मन खाली है।

ज्ञानामृत के प्रत्येक लेख से आत्मबल और जीवन जीने की कला मिलती है।

— ब्रह्माकुमार जय प्रकाश गुप्ता,  
एडवोकेट, उच्च न्यायालय,  
इलाहाबाद

मई अंक में ‘कमी को गुण में बदलो’ पढ़कर मन प्रसन्न हुआ। कमजोरी को चाहिए सहानुभूति, न कि नफरत। मैं ‘गिरे हुए को उठाओ और मदद करो’ के सिद्धांत पर कार्य कर रहा हूँ।

“ज्ञानामृत से मिला हमें प्रकाश,  
बाबा का मिला आशीर्वाद,  
यह सफर चलता रहे निरंतर,  
ख्याति हो विश्व में परिवर्तन की,  
बदल दें अपने विचार सभी”

— सुनील कुमार दाधीच,  
वरिष्ठ अध्यापक, बुन्दी (राज.)

‘ज्ञानामृत’ का हर लेख दैवी बुद्धिवान बनाने वाला है। रोग, शोक, भय, चिन्ता से मुक्त करने वाला है। ईश्वरीय प्रेम सिखाने वाला है। रमेश भाई का लेख यज्ञ इतिहास और जानकी दादी का लेख ईश्वरीय मार्ग पर चलने की विधि बताने वाला है। सम्पादकीय लेख रूहानी सौन्दर्य बनाने का मार्गदर्शक है।

— ब्रह्माकुमार वृजविहारी,  
टिकैतगंज, बाराबंकी (उ.प्र.)

‘ज्ञानामृत’ आत्मा की पिपासा को शान्त करने की वह कड़ी है जिससे हम घर बैठे शान्ति का अनुभव करते हैं। सुन्दर, ज्ञानवर्धक, सारगर्भित लेखों द्वारा पोषक आहार की प्राप्ति होती है। पत्रिका गागर में सागर भरती है। इसकी प्रशंसा, रवि को दीपक दिखाना है।

— अंजली प्रफुल्ल खले, रतलाम

‘ज्ञानामृत’ के द्वारा आध्यात्मिक ज्ञान में वृद्धि हुई है। मानसिक शान्ति प्राप्त करने की दिशा में प्रगति हुई है। गुणों में भी वृद्धि हुई है। क्रोध और तनाव नैचुरल नहीं हैं, इस वास्तविकता का ज्ञान हुआ है। अब जीवन सुखमय हो गया है।

— विजेन्द्र पाल सिंह, एडवोकेट,  
दौगला, मेरठ (उ.प्र.)

ज्ञान-योग के साथ ‘ज्ञानामृत’ के नियमित पठन-पाठन से मुझमें अटल कन्द्रोलिंग पावर का सृजन हो गया है जिसकी बदौलत बुरा सोचने, बोलने, देखने तथा करने की आदत मृतप्रायः हो गयी है। ज्वलंत उदाहरणों के लेख पाठकों में व्याप्त विकारों को दूर कर दैवीगुण अपनाने में आधार का काम करते हैं। दिव्य बुद्धि से विभूषित दादी जानकी जी के सटीक उत्तर मन को सन्तोष से भर देते हैं। सन्तुलित एवं मिश्रित विषयों के चुनाव के लिए सम्पादक मण्डल धन्यवाद का पात्र है।

— ब्रह्माकुमार अजीत भाई,  
सेवानिवृत्त अभियन्ता प्रमुख, पटना